PG Diploma in Ksharakarma (MSR)-2025

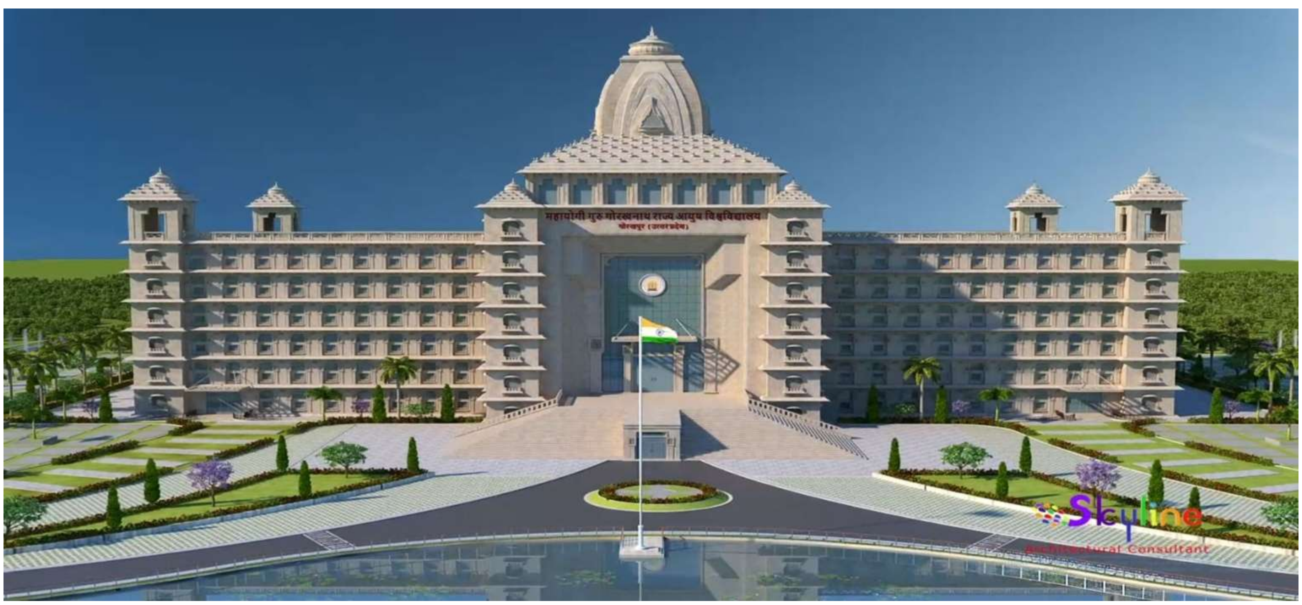

Mahayogi Guru Gorakhnath Ayush University, Gorakhpur, Uttar Pradesh -273306, India

PG Diploma in Ksharakarma (MSR)-2025

क्षारकर्म – दो वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए एम. एस. आर
(सेल्फ फाइनेंस कोर्स)

पाठ्यक्रम का शीर्षक – क्षारकर्म में पीजी डिप्लोमा कोर्स।

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः– पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम का उद्देश्य व्यापक व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ संबंधित आधुनिक विज्ञान के अनुसार वैज्ञानिक प्रगति के ज्ञान के साथ क्षारकर्म का गहन ज्ञान रखने वाले स्नातकोत्तर छात्रों को तैयार करना है, ऐसे कुशल स्नातकोत्तर विद्वान पूरी तरह से स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होंगे।

2 वर्षीय पीजी डिप्लोमा क्षारकर्म कार्यक्रम के पूरा होने पर स्नातकोत्तर छात्र –

1. व्यापक सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ क्षारकर्म का गहन ज्ञान प्राप्त करना।

2. आयुर्वेदिक ज्ञान के साथ ही क्षारकर्म के प्रासंगिक आधुनिक विज्ञान में वैज्ञानिक प्रगति का भी ज्ञान प्रदान करना।

पाठ्यक्रम अवधि–प्रत्येक स्नातकोतर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के शिक्षण एवं प्रशिक्षण की अवधि परीक्षा अवधि सहित 2 वर्ष होगी।

शैक्षणिक योग्यता – महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विषयों के अनुसार समय–समय पर लागू पीजी डिप्लोमा के नियम अनुसार –

- . पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु चयनित छात्रों को मान्यता प्राप्त संस्थान से आयुर्वेदाचार्य /बीएएमएस या समकक्ष योग्यता जैसे श्रीलंका, नेपाल आदि देशों से प्राप्त समकक्ष डिग्री होनी चाहिए। उसे एनसीआईएसएम या किसी भी राज्य मेडिकल काउंसलिंग बोर्ड या अन्य देशों से स्थाई पंजीकरण संख्या या सुसंगत मान्यता प्राप्त होनी चाहिए।

- उम्मीदवार पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रवेश के लिए चिकित्सकीय रूप से स्वस्थ होना चाहिए।

पाठ्यक्रम का नामकरण– क्षारकर्म में पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम।

उम्मीदवार के चयन की विधि – पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए छात्रों का चयन NEET (National Eligibility Cum Entrance Test) की मेरिट के आधार पर महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित सक्षम अधिकारी द्वारा तय की गई योग्यता के आधार पर किया जाएगा। NEET की परीक्षा में सम्मिलित न हो पाने वाले छात्र एवं विदेशी छात्रों का चयन महायोगी गुरू गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित सक्षम अधिकारी द्वारा तय की गई योग्यता के आधार पर किया जायेगा।

आवंटन प्राधिकारी – महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर निर्धारित किया जाएगा।

PG Diploma in Ksharakarma (MSR)-2025

सीट का आरक्षण – महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर निर्धारित किया जाएगा।

पीजी डिप्लोमा कोर्स सिलेबस और पाठ्यक्रम –2 वर्ष का शिक्षण और प्रशिक्षण।

कुल कार्यकाल 2 वर्ष की पूर्ण अवधि का अंतिम परीक्षा सहित।

अध्ययन का विषय – महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर अनुमोदित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष में एनसीआईएसएम मानक के अनुसार तैयार किया गया।

आवेदन शुल्क – **विदेशी छात्रों के लिए 1,50,000/- रुपये प्रति वर्ष और भारतीय छात्रों के लिए 95,000/- रुपये प्रति वर्ष |**

क्षारकर्म – दो वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

लक्ष्य एवं उद्देश्य –

1 क्षारकर्म चिकित्सा के विशेषज्ञ के रूप में आत्मविश्वासपूर्ण और सफलतापूर्वक क्षारकर्म चिकित्सा का अभ्यास करने के लिए वैद्यों को तैयार एवं सुसज्जित करना।

2 अनुशासित प्रशिक्षण के अंत में छात्र का क्षारकर्म विशेषता में नैतिक रूप से अभ्यास करने में सक्षम होना।

3 क्षारकर्म विशेषज्ञता में अधिकांश स्थितियों का प्रबंधन नैदानिक मूल्यांकन (Clinical assessment) द्वारा करना एवं क्षारकर्म के सम्बन्धित क्षेत्र में कुशल योग्यता ग्रहण करवाना।

4 क्षारकर्म चिकित्सा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं अनुसंधान के लिए विशेषज्ञ भी तैयार करना।

पाठ्यक्रम की अवधिः

स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण की अवधि पूर्ण दो वर्ष होगी।

पात्रता मापदंडः

किसी भी आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज में अथवा पी.जी. सेंटर में डिप्लोमा के लिए चुने गये छात्र के पास यूजी (BAMS) डिग्री की समकक्ष योग्यता होनी चाहिए। और (एम. एस. ए. बी)मान्यता प्राप्त आयुर्वेदाचार्य NCISM या किसी राज्य मेडिकल काउंसलिंग या बोर्ड के साथ स्थायी पंजीकरण प्राप्त होना चाहिए।

पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्याः

इसमें दो साल का प्रशिक्षण शामिल होगा। पाठ्यक्रम का कुल कार्यकाल अंतिम परीक्षा अवधि सहित पूर्ण दो वर्षों का होगा। Research Topic से सम्बन्धित Dissertation द्वितीय वर्ष की परीक्षा से तीन माह पूर्व जमा करना अनिवार्य है।

पाठ्यक्रम का नामकरणः क्षारकर्म में पीजी डिप्लोमा

परीक्षा :

प्रत्येक विषय में सैद्धांतिक, नैदानिक, व्यावहारिक और मौखिक परीक्षा।

a) लिखित (Theory): प्रत्येक वर्ष लिखित परीक्षा के दो पेपर होंगे।

b) क्लिनिकल (Clinical): एक विशेषज्ञ के रूप में स्वतंत्र कार्य को समझने के लिए अभ्यर्थी के ज्ञान और क्षमता का आकलन करने के उद्देश्य से विषय की क्लिनिकल परीक्षा आयोजित की जाएगी।

c) मौखिक (Oral): विस्तारपूर्वक होने वाली मौखिक परीक्षा का उद्देश्य विषय, जांच प्रक्रियाओं, चिकित्सीय तकनीकों और विशेषज्ञता के अन्य पहलुओं के बारे में छात्र के ज्ञान और क्षमता का आकलन करना होगा।

छात्र को उत्तीर्ण होने के लिए विषय में कम से कम 50% अंक प्राप्त करने होंगे जिसमें लिखित, प्रैक्टिकल सहित क्लिनिकल और मौखिक परीक्षाएं शामिल होंगी।

परीक्षाओं की संख्या:

कुल मिलाकर दो परीक्षाएं होंगी:

क) प्रथम वर्ष के अंत में एक परीक्षा जो केंद्र या संस्थान द्वारा आयोजित की जाएगी।
ख) अंतिम परीक्षा दूसरे वर्ष के अंत में होगी जो संबद्ध विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जाएगी।

पी.जी. डिप्लोमाधारक के अधिकार और विशेषाधिकार–

1. क्षारकर्म विधा में विशेषज्ञ के रूप में अभ्यास करना।

2. अस्पतालों में प्रशासनिक संचालन करना।

आयु सीमा:

न्यूनतम 22 वर्ष और अधिकतम 45 वर्ष।

छात्रों के चयन का तरीका अथवा प्रवेश परीक्षा/बीएएमएस के अंतिम वर्ष की मेरिट के आधार पर।

शिक्षा का माध्यम– अंग्रेजी /संस्कृत/हिंदी –

पाठ्यक्रम शुल्क– जैसा कि संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा तय किया गया है–

PG Diploma in Ksharakarma (MSR)-2025

क्षारकर्म – पी जी डिप्लोमा पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष

लिखित (दो प्रश्नपत्र) – अधिकतम अंक – 100 (प्रत्येक)

प्रैक्टिकल (एक)– अधिकतम अंक – 100

प्रश्नपत्र – 1 मूलभूत सिद्धांत

भाग– एक

शल्य तंत्र का परिचय– शल्य तंत्र की परिभाषा, और महत्व, शल्य चिकित्सक के गुण।

1 त्रिविध कर्म–पूर्वकर्म, प्रधानकर्म और पश्चात्कर्म, गुदमार्ग (एनो–रेक्टल) विकारों में क्षार और क्षार सूत्र अनुप्रयोग से संबंधित विधियाँ।

2 सर्जिकल नैतिकता (surgical ethics)

3 मूलभूत शल्य चिकित्सा संकल्पनाएँ और शल्य चिकित्सा का अभ्यास।

4 गुदमार्ग (एनो–रेक्टल) क्षेत्र–रचना शारीर और क्रिया शारीर।

क) आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

आयुर्वेद में गुद की शारीरिक संकल्पना, निर्माण, विभिन्न प्रमाण, गुदवलियाँ, उत्तरगुद और अधरगुद, गुद मर्म।
उत्तरगुद और अधरगुद का कार्य, गुदवलियों का महत्व और मलत्याग क्रिया में इनका महत्व। अपान वायु की संकल्पना और उसके कार्य। मलत्याग एवं मूत्रत्याग क्रिया में अपान वायु का महत्व और विभिन्न गुदामार्ग (एनो–रेक्टल) विकारो की उत्पति में इसकी संबंधना। दूषित अपान वायु की विशेषताएँ एवं इसके शमन के उपाय।

ख) आधुनिक दृष्टिकोण

गुदमार्ग (एनो–रेक्टल) क्षेत्र में शारीरिक संरचनाएं, गुदमार्ग (anal canal)– रचना शारीर, मलाशय, perianal क्षेत्र, perianal त्वचा, प्रावरणी, मांसपेशियां, anal sphincters, मलाशय और गुदमार्ग के आधार (support), गुद और पेरिएनल क्षेत्र के निकट विभिन्न संरचनाए/स्थान और गुद में उनकी महत्ता– मलाशय संबंधी विकार, गुद ग्रंथि, गुद क्रिप्ट, गुद म्यूकोसा, गुद वाल्व, गुदमार्ग और मलाशय के विशिष्ट चिह्न। शिरा और धमनी आपूर्ति, शिराजाल, मलाशय और गुद नलिका की संवहनी आपूर्ति की विशेषता। मलाशय और गुदमार्ग की लसीका और संक्रमण। पुडेंडल नलिका (अल्कॉक्स कैनाल) इसमें उपस्थित अवयव सामग्री और महत्व। पेरिटोनियल परावर्तन, मलाशय की फेशियल कला, पेल्विक डायाफ्राम, पुरुष और स्त्री पेरिनियम । मलाशय और गुद नलिका की हिस्टोलॉजिकल संरचनाएं गुदनलिका, मलाशय, पेरिएनल मांसपेशियां, anal sphincters आदि का कर्म / क्रिया, मलत्याग क्रिया, अवशिष्ट

मल का संचय, एनोरेक्टल क्षेत्र से संबंधित संरचनाएं और एनोरेक्टल क्षेत्र के संबंध में उनका कार्यात्मक प्रभाव, एनोरेक्टल विकारों की उत्पत्ति में उनकी क्रिया का प्रभाव, anal sphincters का इन्द्रिय निग्रह (continence) और अनिग्रह (incontinence) में महत्ता ।

भाग–बी

1. गुद विकार के निदान और उपचार के लिए उपयोग में आने वाले यन्त्र और शस्त्रों का ज्ञान

भगन्दर के निदान और उपचार में उपयोगी उपकरण। डॉ.पी.जे. देशपांडे द्वारा क्षारकर्म उपयोग के लिए निर्मित उपकरण.

2. निर्जीवाणुकरण – महत्व, विधियॉ एवं उनका अनुप्रयोग।

3. गुद विकारों के लिए नैदानिक परीक्षण, रेडियोग्राफ, फिस्टुलोग्राम, सोनोग्राम, सोनोग्राफी, CT–स्कैन, एमआरआई और अन्य अद्यतन उपकरणों का ज्ञान।

4. अनुसंधान पद्धति और जैव सांख्यिकी का परिचय।

पेपर– 2

आयुर्वेदिक और आधुनिक औषधि फार्माकोलॉजी

भाग– एक

क्षार का विस्तृत वर्णन –

क) परिभाषा, प्रकार–प्रतिसारणीय क्षार और पानीय क्षार, गुण, औषधियों की फार्माकोलॉजिकल क्रिया, रासायनिक संगठन, निर्माण की विधि, इसका मानकीकरण, निर्जीवाणुकरण और भंडारण।

ख) क्षारकर्म के योग्य, अयोग्य एवं उपद्रव।

2. क्षारसूत्र निर्माण –

क) ऐतिहासिक दृष्टिकोण, इसके निर्माण में उपयोग में आने वाली औषधि द्रव्य, उनकी पहचान, संग्रह, गुण, औषधि द्रव्यों की क्रियाएं, रासायनिक संगठन निर्माण की विधि, इसका मानकीकरण, निर्जीवाणुकरण और भंडारण शामिल हैं।

ख) गुद विकारों में क्षारसूत्र के योग्य, अयोग्य, एवं उपद्रव ।

ग) विभिन्न अन्य क्षार तैयारी जैसे–क्षारवर्ती और क्षारपिचु।

3. क्षार का फार्माकोडायनामिक्स रासायनिक विश्लेषण, पीएच मान, क्षार की दारण और क्षणन आदि क्रियायों की कार्मुक्ता।

4. पानीय क्षार का वर्णन और उसके योग्य एवं अयोग्य।

भाग–बी

1. गुद विकारों की चिकित्सा में प्रयुक्त निम्नलिखित औषधियों की फार्माकोलॉजी का विस्तृत अध्ययन। (a) एंटीबायोटिक्स (b) विरेचक (c) वेदनाहर और एनएसएआईडी (d) शोणितस्थापन (e) संज्ञाहरण एजेंट

2. गुद विकारों में उपयोग की जाने वाली आयुर्वेदिक औषधियां ।

PG Diploma in Ksharakarma (MSR)-2025

क्षारकर्म – पी जी डिप्लोमा पाठ्यक्रम

द्वितीय वर्ष

लिखित (दो प्रश्नपत्र) – अधिकतम अंक – 100(प्रत्येक)

प्रैक्टिकल (एक)– अधिकतम अंक – 100

प्रश्नपत्र –1 निदान एवं चिकित्सा

भाग– एक

1. व्रण शोफ, व्रण और नाड़ी व्रण का निदान, संप्राप्ति, लक्षण और चिकित्सा।

2. शोथ, व्रण एवं (नाडी व्रण) पायलोनिडल साइनस–संप्राप्ति, भेद, पूर्वरूप, लक्षण ।

3. गुदविद्रधि का निदान, संप्राप्ति, लक्षण और चिकित्सा।

4. भगंदर पिड़का और भगंदर

भगंदर पिडका – भगंदर पिडका की उत्पति, प्रकार, निदान, पूर्वरूप, रूप, विशेषताएं, विभेदक निदान, परीक्षण, चिकित्सीय योग्य और अयोग्य, साध्यता, असाध्यता / भगंदर पिडका के निवारण एवं चिकित्सा । पेरिएनल, इस्चियो रेक्टल, सबम्यूकोसल और एनो–रेक्टल क्षेत्र और पेरिनियम की अन्य पिडकाएं, उनके निदान, पूर्वरूप रूप, परीक्षण, विभेदक निदान और उनका उपचार ।

भगंदर– संप्राप्ति, प्रकार, वर्गीकरण, निदान, पूर्वरूप, रूप, निदान, परीक्षण, विभिन्न चिकित्सा विधियाँ और उपशय, शल्य चिकित्सा सिद्धांत, पूर्वकर्म, भेदन किया के प्रकार, भगंदर की चिकित्सा के लिए आयुर्वेद में विभिन्न शल्य चिकित्सा विधियाँ। शल्य क्रिया पश्चात कर्म, उपद्रव एवं उनकी चिकित्सा। भगंदर की चिकित्सा में क्षार और अग्नि कर्म जैसी पुरातन चिकित्सा और पैरा सर्जिकल प्रक्रियाएं।

भाग–बी

भगन्दर :

1. परिभाषा, संप्राप्ति, वर्गीकरण, नैदानिक प्रस्तुति और नैदानिक विधियॉ

2. जटिल भगन्दर और उनका उपचार – कठिन और जटिल भगन्दर का उपचार। अंतर्मुखी भगंदर, बहिर्मुखी भगन्दर, सुप्रा लेवेटर एक्सटेंशन, अनेकविध भनन्दर, लॉन्ग पेरिनियल और ग्लूटियल एक्सटेंशन। horse shoe shaped भगन्दर (फिस्टुला–इन–एनो), पुनः पुनः भगन्दर।(Recurrent Fistula-in-Ano)

3. क्रिप्टोग्रंथिजनित के अतिरिक्त अन्य भगन्दर – जैसे मूत्रमार्ग, योनि और मूत्राशय के भगन्दर, आधात निर्मित भगन्दर

4. भगन्दर का उपचार – भगन्दर की विभिन्न विधाएं, फिस्टुलेक्टोमी, फिस्टुलोटॉमी, प्राथमिक सीवन कर्म के साथ फिस्टुलेक्टोमी (with primary closure), त्वचा ग्राफ्टिंग के साथ फिस्टुलेक्टॉमी। आदि, भगन्दर में सेटोन के द्वारा उपचार, योग्य और अयोग्य, विशेषता और दोष।

5. मधुमेह, एचआईवी, टीबी, आईएचडी और स्टेरॉयड थेरेपी वाले रोगी में भगन्दर का उपचार।

6. पूर्वकर्म - क्षार और क्षार सूत्र के प्रयोग से संबंधित विभिन्न प्री–ऑपरेटिव तैयारी विशेषकर भगन्दर में क्षारसूत्र।

7. पश्चात् कर्म – पोस्ट ऑपरेटिव सावधानियां, व्रण रक्षा, मूत्र संबंधी उपद्रव और रोगियों की शल्य पश्चात उपासनीय कर्म (रक्षा) अनुवर्ती (follow up) आदि।

8. सहायक चिकित्सा – भगन्दर के उपचार में एनाल्जेसिक और एंटीबयोटिक्स और अन्य आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग ।

PG Diploma in Ksharakarma (MSR)-2025

प्रश्नपत्र –2 निदान एवं चिकित्सा

भाग– एक

1. अर्श (बवासीर)–

क) आयुर्वेद और आधुनिक के अनुसार परिभाषा, संप्राप्ति, पूर्वरूप, प्रकार, नैदानिक लक्षण, निदान, विभेदक निदान, उपद्रव, उपशय और चिकित्सा ।

ख) क्षार लेप और क्षार सूत्र द्वारा अर्श का उपचार – योग्य, प्रयोग की विधि, निरीक्षण और शल्य कर्म पश्चात् निरीक्षण ।

2. आयुर्वेद और आधुनिक के मतानुसार परिकर्तिका (फिशर–इन–एनो) परिभाषा, संप्राप्ति, पूर्वरूप, प्रकार, नैदानिक लक्षण, निदान, विश्ेदक निदान, उपद्रव, उपशय (prognosis)।

3. गुदभंश (मलाशय का बाहर निकलना)ः आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के अनुसार परिभाषा, संप्राप्ति, नैदानिक लक्षण और चिकित्सा ।

भाग–बी

1. क्षारसूत्र चिकित्सा काल में और पश्चात् काल में वेदना का उपचार और वेदना कम करने के उपाय।

2. क्षारकर्म और क्षारसूत्र चिकित्सा की कठिनाएं और उपद्रव जैसे। रुजा, रक्तस्राव, संक्रमण, विलंबित कर्तन. पुनरावृत्ति, अनिग्रह, खिचांव (strictures) आदि और उनकी चिकित्सा ।

3. क्षारसूत्र द्वारा भगंदर के उपचार में क्षारसूत्र की संशोधित तकनीक/, शल्य चिकित्सा एवं क्षारसूत्र चिकित्सा का संयोजन।

4. कर्कटार्बुद रोगी का निदान और रेफरलः–

a) प्रोस्टेट का कर्कटार्बुद रोग (b) गुद नलिका और मलाशय का कर्कटार्बुद रोग (c) बाह्य जननांग, गर्भाशय ग्रीवा और गर्भाशय कर्कटार्बुद रोग (d) किसी भी स्थिति में शीघ्र बचाव के उपाय /कोई उचित सुविधा के लिए रेफरल की आवश्यकता।

5. क्षारकर्म के क्षेत्र में अनुसंधान और वर्तमान प्रगति का अद्यतन ज्ञान।

PG Diploma in Ksharakarma (MSR)-2025

प्रैक्टिकल–

प्रैक्टिकल की सामग्री

1. केस हिस्ट्री रिकॉर्डिंग और मरीजों पर क्षारकर्म का प्रदर्शन।

2. व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए दिशानिर्देशः

a) गुद विकारों में रोगी परीक्षण और नैदानिक परीक्षण करना।

b) क्षारकर्म का अनुप्रयोग

निरीक्षण – 100, सहायक कर्म –50, शल्य कर्म– 25 केस।

3. गुद विकारों की नैदानिक परीक्षण में मलाशय जांच, डिजिटल जांच, उदर परीक्षण और वंक्षण परीक्षण

4. विशेष परीक्षण :

a) प्रोक्टोस्कोपी

b) सिग्मायोडोस्कोपी

c) फिस्टुलोग्राम की तकनीक

d) गुद मैनोमेट्री

e) अन्य नवीनतम नैदानिक रेडियोलॉजिकल परीक्षण।

प्रैक्टिकल परीक्षा का रूप (पैटर्न)

1. केस रिकॉर्ड – 20 अंक

2. विभिन्न रोगों में क्षारकर्म की प्रयोज्यता, विशेषकर भगन्दर, अर्श आदि के संदर्भ में–30 अंक

3. प्रोजेक्ट कार्य–20 अंक

4. मौखिक अंक–30 अंक

कुल अंक–100

संदर्भ के लिए पाठ्य पुस्तकें

1. बृहत्रयी और लघुत्रयी से रचना शारीर एवं क्रिया शारीर का सम्बंधित भाग
2. **क्लीनिकल एनाटोमी** फॉर मेडिकल स्टूडेंट्सः– स्नेल
3. मेडिकल फिजियोलॉजी की पाठ्य पुस्तकः– गाइटन और हॉल
4. सर्जिकल उपकरणों और प्रक्रियाओं का मैनुअलः– एम.एम.कपूर
5. क्षार सूत्रः– आरएवी
6. मेडिकल फार्माकोलॉजी की अनिवार्यताएँः– के. डी. त्रिपाठी
7. प्राइमरी एनेस्थीसियाः– मौरिस किंग
8. बृहत्रयी और लघुत्रयी से रचना शारीर एवं क्रिया शारीर का उपयुक्त भाग
9. कोलन, रेक्टम और गुदा की सर्जरीः– रॉब और स्मिथ
10. गुदा, मलाशय और बृहदान्त्र की सर्जरीः– गॉलिघेर जे.सी.
11. डिमॉस्ट्रेशन ऑफ फिजिकल साइंस इन क्लिनिकल–हैमिल्टन बेली सर्जरी
12. फिस्टुला–इन–एनो के नवीन उपचारः– पी.जे. देशपांडे तकनीक और के.आर.शर्मा।
13. **ए मैनुअल ऑन फिस्टुला इन आनो एंड क्षारसूत्र थेरेपी - प्रोफेसर एम साहू ।**
14. **कोलोरेक्टल डिसीसेस एंड क्षारसूत्र सर्जरी -डॉ. लालता प्रसाद ।**
15. **भैषज्यकल्पना विज्ञानं -आचार्य सिद्धिनन्दन मिश्र ।**
16. **भैषज्यकल्पना विज्ञानम चौखम्बा संस्कृत भवन** 1998 **.प्रोफेसर के. आर. सी. रेड्डी ।**

MAHAYOGI GURU GORAKHNATH AYUSH UNIVERSITY
Pipri, Bhathat, Gorakhpur, Uttar Pradesh-273306

(Application for PG Diploma in Ksharkarma (PGDKK) For Indian & Foreign Students)

(Last Date For Submission of Application form–15 days from the date of advertisement)

ABOUT THE CANDIDATE (To be filled by the Candidate)

1. **Name: …………………………………………………………………………**
2. **Address for correspondence: ……………………………………………………………………**

   …………………………………………………………………………………………………….

   Mobile No:……………………………Email ID:……………………………………………….

3. **Academic Record :**

   (Attach self attested copies of all the relevant credentials)

Particulars	Percentage	Year of Completion	College / Institute/University
10+2			
Under Graduation (Ayurvedacharya/BAMS) or Equivalent Degree for Foreign Nationals			

4. **Registration Number of (Ayurvedacharya/BAMS) or Equivalent Degree for Foreign Nationals --**
5. **Are you employed? If yes, give details of your employment, mentioning the nature of the job, designation, etc.**

   ……
   ……

6. **Are you the recipient of any financial assistance in the form of a Scholarship/Stipend etc? If so, give details.……………………………………………………………………………………..**

   ……

7. **Enclose your updated CV(PDF Format)……………………………………………………**

DECLARATION BY THE CANDIDATE

I hereby declare that the particulars furnished by me are correct. I am aware that any incorrect information may lead to the cancellation of my admission. I shall abide by the rules and regulations of the University.

Date:……………………

Place:……………………

Signature of the Candidate

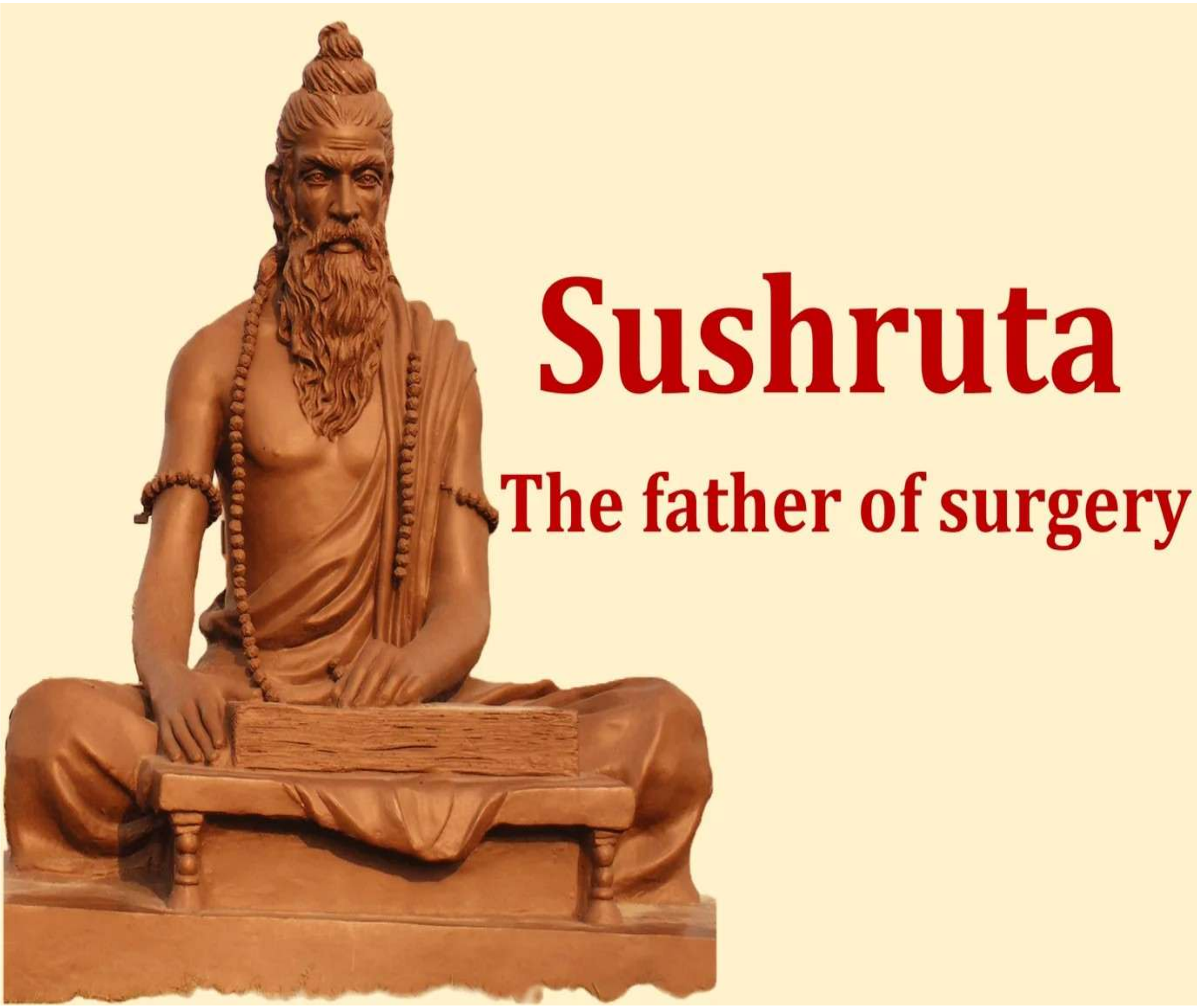

Mahayogi Guru Gorakhnath Ayush University, Gorakhpur, Uttar Pradesh -273306, India